मुख्य परीक्षा

प्रश्नः-मानव व्यवहार परीक्षण के विभिन्न अवयवों को बताते हुए स्वेच्छाचारिता को विस्तारपूर्वक बताइए। इस सन्दर्भ में गांधी का क्या विचार है? इसे समझाते हुए स्पष्ट कीजिए।

(250 शब्द)

Elucidating the various components of, examining human behaviour, explain voluntariness. What are thoughts of Gandhi in this regards? clarify with examples.

(250 Words)

मॉडल उत्तर

- मानव आचरण के नैतिक पक्ष का परीक्षण किया जाना एक जटिल प्रक्रिया है। वस्तुतः यह परीक्षण कई मापदण्डों को समाहित करता है, लेकिन इस परीक्षण का सरलीकरण किया जा सकता है। पहले स्तर के अंतर्गत उस व्यक्ति को समझने का प्रयास किया जाता है, जिसका आचरण परीक्षण होना है व दूसरे स्तर पर उस आचरण की जांच होती है, जिसे नैतिकता निर्धारण भी कहते हैं।

  मानव आचरण के वैधानिक पक्ष को समझने के साथ-साथ यह समझना भी आवश्यक है कि इस मानवीय व्यवहार में उचित या अनुचित के अंश किस रूप में विद्यमान हैं। आचरण के औचित्य का यह परीक्षण नैतिकता परीक्षण कहलाता है। इस सन्दर्भ में प्रथम चरण की जाँच निम्न तीन अवयवों के द्वारा होती है-

  1. ज्ञान
  2. स्वेच्छा
  3. स्वतंत्रता

  जब कोई आचरण व्यक्ति द्वारा स्वेच्छा से किया जाए, तो उस आचरण के लिए उस व्यक्ति को नैतिक रूप से उत्तरदायी माना जा सकता है। हालांकि, व्यक्ति की स्वेच्छाचारिता एक सामान्य प्रघटना नहीं है। बल प्रयोग या दबाव स्वेच्छाचारिता के विरोधाभासी अवयव हैं अर्थात् जब किसी व्यक्ति पर कोई शारीरिक बल प्रयोग किया जाए या फिर उस पर एक बाहरी दबाव बना दिया जाए, तो व्यक्ति की अपनी स्वेच्छा समाप्त हो जाती है। ऐसे में उसके आचरण के अनैतिक प्रभाव के लिए उस व्यक्ति को उत्तरदायी नहीं बनाया जा सकता है।

  लेकिन नैतिक उत्तरदायित्व की स्थापना के पूर्व यह समझ लेना आवश्यक है कि क्या वह व्यक्ति उस बल प्रयोग या दबाव का प्रतिरोध कर सकता था। वस्तुतः शारीरिक या मानसिक दबाव दो प्रकार के होते हैं-

  1. प्रतिरोधात्मक 2. अप्रतिरोधात्मक

  अगर दबाव या बल का प्रतिरोध किया जाना संभव हो और व्यक्ति उसका प्रतिरोध नहीं करता, तो वह व्यक्ति नैतिकता उत्तरदायित्व से मुक्त नहीं हो सकता है।

- स्वेच्छाचारिता के संदर्भ में गाँधी का विचार है कि "यदि प्रतिरोध करना संभव है, तो अत्याचार सहना भी अनैतिक होता है।" इस संदर्भ में गाँधी का मानना है कि अनुचित दबाव या बल प्रयोग का प्रतिरोध होना चाहिए। वस्तुतः गाँधी प्रतिरोध की बात इस संदर्भ में करते हैं कि वह मानव जीवन की सभी परिस्थितियों को समाहित करे। गाँधी के इस अहिंसावादी प्रतिरोध के सिद्धांत को 'निष्क्रिय प्रतिरोध' का सिद्धांत कहा जाता है। इस सिद्धांत के अंतर्गत जब व्यक्ति के द्वारा प्रतिरोध करने की क्षमता हो और प्रतिरोध न किया जाय, तो इसे अनैतिक माना जाता है।
- एक सिविल सेवक के पूरे कार्यकाल के दौरान इस प्रकार के दबाव की परिस्थिति कई बार आती है, जो उन्हें अनैतिक कदम उठाने को बाध्य करती है। अच्छा पद, प्रोन्नति, बेहतर स्थानान्तरण इत्यादि के दबाव में हमारे देश में अनैतिक आचरण की एक बड़ी शृंखला है। सिविल सेवक को चाहिए कि वे मनोवैज्ञानिक दबाव दरकिनार कर उचित आचरण की ओर अग्रसर हों।